स दियों से शिवभक्ति को समर्पित भगवान महादेव की अलौकिक कृपा पाने के लिए पौराणिक जागेश्वर धाम का आध्यात्मिक जगत में अपना विशिष्ट महत्व है। समुद्रतल से करीब 6200 फीट की ऊंचाई पर कुमाऊं मंडल के अल्मोड़ा जिले में स्थित 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह पावन धाम आस्था का विशिष्ट केंद्र है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता करीब 2500 वर्ष पुराना 250 मंदिरों का समूह है, जिनमें एक ही स्थान पर छोटे-बड़े 224 मंदिर हैं। धार्मिक लिहाज से महत्वपूर्ण अल्मोड़ा जिले में कई पौराणिक और ऐतिहासिक मंदिर हैं। इसमें जागेश्वर धाम विश्व के प्रसिद्ध मंदिरों में शामिल है। जागेश्वर धाम के पुजारी हरिमोहन भट्ट पुराणों के हवाले से बताते हैं कि यहां भगवान शिव और सप्त ऋषियों ने तपस्या की थी। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग को लेकर मान्यता है कि आदि शंकराचार्य ने इसकी प्राण प्रतिष्ठा की थी। जागेश्वर मंदिरों के समूह व ज्योतिर्लिंगों आदि के लिए जागेश्वर धाम का नाम इतिहास में दर्ज है। शिव पुराण, लिंग पुराण और स्कंद पुराण आदि पौराणिक कथाओं में भी मंदिर का उल्लेख है। मंदिर में शिलालेख, नक्काशी और मूर्तियों का अनुपम खजाना है। पवित्र जाटगंगा नदी की घाटी में स्थित मंदिर में वास्तुकला और इतिहास के लिहाज से भी कई पौराणिक स्थान है। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक ज्योतिर्लिंग होने से इसका महत्व और बढ़ जाता है।

प्रस्तुति- कमलेश कनवाल

2500 वर्ष पुराना है कुमाऊं मंडल में मंदिरों का यह समूह

250 मंदिर हैं यहां, जिनमें एक ही स्थान पर छोटे-बड़े 224 मंदिर

6200 फीट की ऊंचाई पर स्थित समुद्रतल से यह धाम

यह भी जानें

- सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन काठगोदाम (हल्द्वानी) है। यहां से सड़क मार्ग से जागेश्वर धाम की दूरी करीब 120-125 किलोमीटर है।
- सबसे नजदीकी हवाई अड्डा पंतनगर एयरपोर्ट है। यहां से सड़क मार्ग से जागेश्वर धाम की दूरी करीब 150 किमी है।
- अल्मोड़ा जिला मुख्यालय से जागेश्वर धाम की दूरी करीब 35 किलोमीटर है।
- मौसम के लिहाज से बरसात का क्रम थमने के बाद सितंबर से नवंबर तक यहां मौसम सुहावना रहता है।

पावन जागेश्वर धाम

यहां मिलती है महादेव की अलौकिक कृपा

श्रद्धालुओं की मनोकामना होती है पूरी

जागेश्वर धाम में मुख्य तौर पर शिव, विष्णु, शक्ति और सूर्य देव की पूजा होती है। दंडेश्वर मंदिर, चंडी मंदिर, जागेश्वर मंदिर, कुबेर मंदिर, मृत्युंजय मंदिर, नंदा देवी या नौ दुर्गा, नवग्रह मंदिर और सूर्य मंदिर यहां के प्रमुख मंदिर हैं। पुष्टि माता और भैरव देव की भी पूजा होती है। यहां पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की हर मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

हरिमोहन भट्ट
पुजारी जागेश्वर धाम

शुद्ध मन और पवित्र हृदय से ही आएं यहां

पुजारी भट्ट कहते हैं कि जागेश्वर धाम आकर भगवान शिव की कृपा पाना चाहते हैं तो मन के भाव शुद्ध और हृदय पवित्र होना चाहिए। शिव तो बड़े दयालु हैं, लेकिन आप किसी का अनिष्ट करने की कामना लेकर यहां आते हैं तो वह कभी पूरी नहीं होगी। यहां केवल अपने और अपने प्रियजनों की मंगलकामनाएं ही पूरी होती हैं।

बोध कथा

सकारात्मक सोच

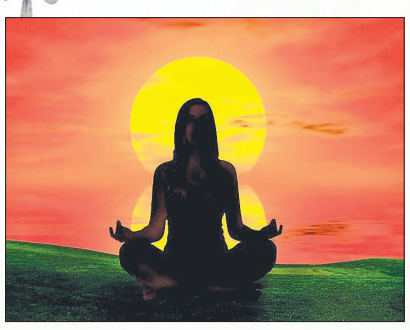

एक राजा था, जिसके एक पैर और एक आंख थी। उस राज्य में सभी लोग खुशहाल थे, क्योंकि राजा बहुत बुद्धिमान और प्रतापी था। एक बार राजा को विचार आया कि क्यों खुद की एक तस्वीर बनवाई जाए। फिर क्या था, देश-विदेश से चित्रकारों को बुलवाया गया और एक से एक बड़े चित्रकार राजा के दरबार में आए। राजा ने उन सभी से हाथ जोड़कर आग्रह किया कि वो उसकी एक बहुत सुंदर तस्वीर बनाएं, जो राजमहल में लगाई जाएगी। सारे चित्रकार सोचने लगे कि राजा तो पहले से ही विकलांग हैं, फिर उसकी तस्वीर को बहुत सुंदर कैसे बनाया जा सकता है? ये तो संभव ही नहीं है और अगर तस्वीर सुंदर नहीं बनी तो राजा गुस्सा होकर दंड देगा। यही सोचकर सारे चित्रकारों ने राजा की तस्वीर बनाने से मनाकर दिया।

तभी पीछे से एक चित्रकार ने अपना हाथ खड़ा किया और बोला कि मैं आपकी बहुत सुंदर तस्वीर बनाऊंगा जो आपको जरूर पसंद आएगी। फिर चित्रकार जल्दी से राजा की आज्ञा लेकर तस्वीर बनाने में जुट गया। काफी देर बाद उसने एक तस्वीर तैयार की जिसे देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और सारे चित्रकारों ने अपने दांतों तले उंगली दबा ली। उस चित्रकार ने एक ऐसी तस्वीर बनाई, जिसमें राजा एक टांग को मोड़कर जमीन पे बैठा है और एक आंख बंद करके अपने शिकार पे निशाना लगा रहा है। राजा ये देखकर बहुत प्रसन्न हुआ कि उस चित्रकार ने राजा की कमजोरियों को छिपाकर कितनी चतुराई से एक सुंदर तस्वीर बनाई है। राजा ने उसे खूब इनाम एवं धन दौलत दी।

-सुरेन्द्र अग्निहोत्री

भारतीय संस्कृति में दांपत्य जीवन का पावन विधान

भा रतीय संस्कृति में विवाह को संस्कार माना गया है। यह दो आत्माओं का विशुद्ध मिलन है। इसमें पति-पत्नी के शरीर दो रहते हुए भी मन एकाकार हो जाता है। जिस प्रकार हाइड्रोजन एवं ऑक्सीजन अपना अस्तित्व खोकर जलरूप बन जाते हैं, उसी प्रकार पति-पत्नी अपना अस्तित्व खोकर दंपती कहलाते हैं। भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी का संबंध काया एवं छाया की भांति है। जिस परिवार में पति-पत्नी के विचार मिलते हों, वह परिवार स्वर्ग होता है। वहां प्रेम की सरिता बहती है। पति-पत्नी के बीच स्नेह-सम्मान, विचार-विनिमय, सहानुभूति सुखी दांपत्य के आधार हैं। यदि दोनों के बीच छिपाव-दुराव, प्रपंच एवं अहंकार उत्पन्न हो जाए तो वह परिवार नरक-तुल्य हो जाता है। पति व पत्नी एक दूसरे के प्रतियोगी नहीं, बल्कि सहयोगी एवं पूरक होते हैं। भारतीय संस्कृति में गठबंधन के बाद पति के लिए पत्नी को छोड़कर विश्व की सारी स्त्रियां मां व बहन बन जाती हैं। उसी प्रकार पत्नी के लिए सारे पुरुष भाई और पिता तुल्य बन जाते हैं।

डॉ. प्रदीप द्विवेदी 'रमण'
आध्यात्मिक लेखक

आधुनिक युग में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर पड़ा है। परिणाम यह हुआ कि पति व पत्नी की इच्छाएं अलग-अलग हो गईं। जब भी पति एवं पत्नी के विचार में मतभिन्नता होगी तो पारिवारिक जीवन की नींव कमजोर जो जाएगी। आजकल लोग भौतिक सुख-सुविधाओं को अधिक प्रमुखता देते हैं और ये सुविधाएं मृगतृष्णा की भांति कभी पूरी नहीं होती। पति-पत्नी का पवित्र संबंध भौतिक सुखों पर आधारित हो गया है। रसना और वासना संबंधी सुख प्राप्त करना मानो युगधर्म बन गया है, जिसके कारण परिवार रूपी प्रेम की गंगा सूखी जा रही है। पति-पत्नी का संबंध पवित्रता, श्रद्धा, विश्वास, सहयोग एवं सम्मान पर आधारित होता है, लेकिन वर्तमान में श्रद्धा, विश्वास एवं सम्मान के बदले स्वार्थ तथा अहंकार की भावना काम करने लगी है, जिसके कारण पारिवारिक जीवन विखंडित होने लगे हैं। आज प्रायः अधिकांश पुरुषों व नारियों के चरित्र दूषित हो गए हैं। आज पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण करते हुए लोग स्वच्छंद आचरण को प्रमुखता दे रहे हैं, जबकि भारतीय संस्कृति पति-पत्नी के संबंध को जन्म-जन्म का संबंध मानती है।

प्राचीन काल में वर-वधु का चुनाव गुण, कर्म एवं स्वभाव के आधार पर होता था, लेकिन आज फैशन, पैसा एवं वेश-विन्यास विवाह का असली मापदंड बन गया है। आज आजादी से रहने की इच्छा और आपसी सामंजस्य के अभाव में विवाह जैसे पवित्र संबंध को हिला दिया है। युवा वर्ग इस संस्कार को बंधन करार दे रहा है। ऐसे में अहम की जबरदस्त टकराहट विवाह के मायने ही बदलकर रख देती है। पश्चिमी सभ्यता अपनाने के कारण ही विवाह के बाद भी संबंध बन रहे हैं। बदलता दृष्टिकोण परंपराओं को कितना धक्का पहुंचाएगा, यह तो भविष्य के गर्भ में है, लेकिन इतना तय है कि युवाओं का दृष्टिकोण पारस्परिक संबंध को लंबे समय तक जोड़े रखने में असफल हो रहा है। भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर व पत्नी को घर की लक्ष्मी माना जाता है। इस परंपरा को स्थायी बनाने के लिए भारत में तीज एवं करवाचौथ जैसे कई व्रत-उपवासों की परंपरा कायम है।

अध्यात्म

अनंत यात्रा

शरीर में समाहित ऊर्जापुंज को आत्मा कहा गया है। यह आत्मा अनंत ऊर्जा अर्थात परमात्मा का एक अति सूक्ष्म अंशमात्र है। भौतिक जगत में रहते हुए यह भौतिक शरीर एक यात्री के सदृश होता है। शरीर के जन्म के साथ ही यात्रा प्रारंभ होती है एवं मृत्यु के उपरांत समाप्त हो जाती है अर्थात भौतिक शरीर के लिए जीवन एक यात्रा के समतुल्य है। जन्म के साथ ही ऊर्जापुंज अर्थात आत्मा भौतिक शरीर से संयुक्त होकर उसकी यात्रा में सहयात्री की भूमिका का निर्वहन करने लगता है एवं मरणोपरांत स्वयं को यात्रा से अलग कर लेता है।

यह कहा जा सकता है कि भौतिक शरीर की यात्रा का आदि व अंत स्पष्टत: ज्ञात होता है। विशेष बात यह है कि भौतिक शरीर भी यात्रा के साथ आरंभ होकर यात्रा की समाप्ति पर स्वयं समाप्त हो जाता है। परंतु ऊर्जापुंज जिसे आत्मा कहकर संबोधित किया जाता है, अपनी यात्रा के आदि व अंत से सर्वथा अपरिचित होता है। आत्मा की यात्रा कब व क्यों प्रारंभ हुई तथा कब व क्यों पूर्ण होगी? इन प्रश्नों का हल आज भी एक चुनौती के रूप में खड़ा है। ऊर्जापुंज अगणित भौतिक शरीरों की भौतिक यात्रा में सहयात्री की भूमिका को निभाता हुआ अपनी अनंत दिव्ययात्रा को जारी रखता है अर्थात आत्मा की इस अलौकिक यात्रा में अनंत लौकिक यात्राएं शामिल होती हैं। इस अलौकिक यात्रा के संबंध में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि यह यात्रा अनंत से प्रारंभ होकर अनंत पर ही पूर्ण होगी, किंतु अनंत को परिभाषित करना भी असंभव है। अनंत को अज्ञात का पर्याय माना जा सकता है।

शिशिर शुक्ला
प्रोफेसर

प्रश्न यह उठता है कि इस अनंत गति को अनवरत जारी रखने के लिए आवश्यक बल किस स्रोत से प्राप्त होता है। संभवत: यह भी अभी तक एक रहस्य है। वस्तुत: यही बल ऊर्जा का अनंत स्रोत है अर्थात अनंत ऊर्जा जिसे परमात्मा कहकर संबोधित किया गया है। परमात्मा का आत्मा से अटूट संबंध है। आत्मा की अनंतयात्रा परमात्मारुपी बल के द्वारा ही नियंत्रित होती है, परंतु इस अनंत ऊर्जापुंज की उत्पत्ति का रहस्य सर्वथा अज्ञात है।

सप्ताह के प्रमुख व्रत

10 अक्टूबर- करवा चौथ, 13 अक्टूबर- अहोई अष्टमी

करवा चौथ

उत्तर भारत में प्रचलित पूर्णिमांत कैलेण्डर के अनुसार करवा चौथ पर्व, कार्तिक माह की संकष्टी चतुर्थी पर मनाया जाता है। धर्म-सिन्धु, निर्णय-सिन्धु तथा व्रतराज जैसे धर्म ग्रंथों में करवा चौथ को करक चतुर्थी के रूप में उल्लेखित किया गया है। करक अथवा करवा मिट्टी से निर्मित एक पात्र होता है, जिसका उपयोग करवा चौथ पूजन, अर्घ्य तथा पारवारिक कुशलता हेतु दान के रूप में किया जाता है। धर्म ग्रंथों में मात्र स्त्रियों को ही इस व्रत के पालन का अधिकार दिया गया है, क्योंकि करक चतुर्थी पर किए जाने वाले इस करवा चौथ व्रत के परिणाम स्त्रियों को ही फलीभूत होते हैं। करवा चौथ व्रत का पालन पति की दीर्घायु एवं सकुशलता के साथ ही पुत्रों, पौत्रों, संपत्ति तथा परिवार की अनंत समृद्धि हेतु भी किया जाता है।

करक चतुर्थी पर की जाने वाली विशेष पूजा मुख्यत: देवी पार्वती को समर्पित है। अखण्ड सौभग्यवती होने के कारण सर्वप्रथम देवी पार्वती की पूजा की जाती है, तत्पश्चात् भगवान शिव, भगवान कार्तिकेय एवं भगवान गणेश की पूजा की जाती है। करवा चौथ के अवसर पर स्त्रियां देवी गौरा तथा देवी चौथ माता का पूजन भी करती हैं, जिन्हें स्वयं देवी पार्वती का रूप माना जाता है।

देवी-देवता

देवी पार्वती करवा चौथ व्रत की मुख्य आराध्य हैं। देवी पार्वती के अतिरिक्त उनके कुटुम्ब के अन्य सदस्यों को भी पूजा जाता है, जिनमें उनके पति भगवान शिव तथा उनके पुत्र भगवान कार्तिकेय एवं भगवान गणेश सम्मिलित हैं।

देवी पार्वती

चौथ माता (देवी चौथ), करवा चौतह तिथि एवं समय

पूर्णिमांत कैलेण्डर के अनुसार - कार्तिक माह (आठवां चन्द्र माह) की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि (चतुर्थ दिवस)

अमांत हिन्दु कैलेण्डर के अनुसार - आश्विन माह (सातवां चन्द्र माह) के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि (चतुर्थ दिवस)

अहोई अष्टमी

अहोई अष्टमी के दिन मातायें अपने पुत्रों की कुशलता के लिए उषाकाल, अर्थात भोर से लेकर गोधूलि बेला, अर्थात सायंकाल तक उपवास करती हैं। सायंकाल के समय आकाश में तारों का दर्शन करने के पश्चात व्रत संपूर्ण किया जाता है। कुछ महिलाएं चन्द्रमा के दर्शन करने के पश्चात व्रत पूर्ण करती हैं, किन्तु इसका अनुसरण करना कठिन होता है, क्योंकि अहोई अष्टमी की रात्रि में चन्द्रोदय विलंब से होता है। अहोई अष्टमी व्रत का दिन करवा चौथ के चार दिन पश्चात तथा दीवाली पूजा से आठ दिन पूर्व पड़ता है। करवा चौथ के समान ही अहोई अष्टमी भी उत्तर भारत में अधिक लोकप्रिय है। अहोई अष्टमी का दिन अहोई आठें के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यह व्रत अष्टमी तिथि के समय किया जाता है, जो माह का आठवां दिन होता है। करवा चौथ के समान अहोई अष्टमी का दिन भी कठोर उपवास का दिन होता है तथा अनेक स्त्रियां पूरे दिन जल तक ग्रहण नहीं करती हैं। आकाश में तारों का दर्शन करने के पश्चात ही उपवास का पारण किया जाता है।

अष्टमी प्रारम्भ- 13 अक्टूबर को 12:24 दोपहर से 14 अक्टूबर को 11:09 बजे समाप्त।